2 जनवरी 2015, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 37, अंक : 19 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जनवरी (प्रथम), 2015 (वीर नि. संवत्-2541) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

वेदी प्रतिष्ठा सानन्द संपन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ हिरणमगरी सेक्टर 3 नेमिनाथ जैन कॉलोनी में श्री शांतिनाथ दिग. जिन चैत्यालय में श्री शांतिनाथ दिग. जैन मुमुक्षु ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 1 से 3 दिसम्बर तक वेदी प्रतिष्ठा का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं पण्डित देवेन्द्रकुमारजी मंगलायतन के प्रवचनों का लाभ मिला।

कार्यक्रम में श्री शांतिनाथ भगवान, श्री आदिनाथ भगवान, श्री महावीर भगवान एवं श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमाएं विराजमान की गईं। साथ ही इन्द्रसभा, श्राविका सभा, अष्ट देवियों की नृत्य प्रस्तुति, प्रतिदिन शोभायात्रा आदि कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। अन्तिम दिन सभी विद्वानों का सम्मान भी किया गया।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना के निर्देशन में पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित अश्विनजी नानावटी नौगामा, पण्डित सचिनजी शास्त्री चैतन्यधाम, पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा एवं पण्डित संदीपजी शास्त्री लूणदा के सहयोग से संपन्न हुये। कार्यक्रम में साथ ही स्थानीय विद्वानों का भी सहयोग रहा।

संपूर्ण कार्यक्रम का निर्देशन व संयोजन डॉ. महावीर प्रसादजी शास्त्री द्वारा हुआ।

गोष्ठियाँ सानन्द संपन्न

सागर (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट अंकुर कॉलोनी मकरोनिया स्थित श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में दिनांक 20 से 25 दिसम्बर तक तीन गोष्ठियों का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित सुदीपजी बीना, पण्डित महेन्द्रजी अमायन, पण्डित नितुलजी शास्त्री इन्दौर आदि विद्वानों का समागम प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम में नि:शंकित अंग, वात्सल्य अंग एवं प्रभावना अंग पर गोष्ठियाँ हुईं, जिसमें लगभग 500 साधर्मियों ने लाभ लिया।

कार्यक्रम का निर्देशन श्री अरुणजी मोदी ने किया।

दिनांक 26 से 30 दिसम्बर तक छहढाला प्रवचन शिविर का आयोजन हुआ। इसमें गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के छहढाला पर सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित मनीषजी शास्त्री खतौली द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ कहान नगर में भगवान श्री महावीरस्वामी जिनमंदिर के 25वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में दिनांक 25 से 29 दिसम्बर तक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं श्री तीनलोक मंडल विधान आयोजित किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड के दोनों समय समयसार एवं मोक्षमार्गप्रकाशक पर तथा डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर दो समय इष्टोपदेश एवं अकृत्रिम चैत्यालय विषय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। प्रतिदिन गुरुदेवश्री के प्रवचनों के अतिरिक्त स्थानीय विद्वान पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री के अष्टपाहुड एवं ब्र. हेमचंदजी हेम के समयसार पर व्याख्यानों का लाभ मिला। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति का आयोजन हुआ।

इस प्रसंग पर आयोजित तीन लोक मण्डल विधान का आयोजन श्रीमती भावनाबेन-सचिनभाई शाह एवं श्रीमती सुनिताबेन-नितिनभाई शाह परिवार मुम्बई की ओर से किया गया।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री एवं पण्डित दीपकजी धवल द्वारा संपन्न कराये गये।

छहढाला प्रवचन शिविर संपन्न

* **सागर (म.प्र.) :** यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 13 से 18 नवम्बर तक छहढाला प्रवचन शिविर संपन्न हुआ। इस अवसर पर गुरुदेवश्री के छहढाला विषय पर सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा दोनों समय प्रवचनों का लाभ मिला।

* **शिवपुरी (म.प्र.) :** यहाँ दिनांक 19 से 23 नवम्बर तक छहढाला प्रवचन शिविर संपन्न हुआ। इस अवसर पर गुरुदेवश्री के छहढाला विषय पर सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर के प्रवचनों का लाभ मिला।

* **आरोन (म.प्र.)** में दिनांक 26 से 30 नवम्बर तक तथा **बेगमगंज (म.प्र.)** में दिनांक 11 से 15 दिसम्बर तक छहढाला प्रवचन शिविर संपन्न हुआ। इस अवसर पर गुरुदेवश्री के छहढाला विषय पर सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त ब्र. नन्हेभैया सागर के प्रवचनों का लाभ मिला।

सम्पादकीय –

संस्कार

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

विज्ञान ने वातावरण की गम्भीरता को तोड़ते हुए कहा – ''ज्ञान ! यदि तू एक–एक बात पर ऐसे लेक्चर देगा, तब तो हो गया अपना कल्याण। मैं तो कुछ गपशप लगाने और मनोरंजन करने के विचार से आया था। पर तूने तो मुझे एक अजीब–सी उलझन में डाल दिया है।

''खैर ! छोड़ो अभी इन बातों को''– यह कह कर समस्या को पीछे धकेलते हुए विज्ञान ने पुन: कहा–''हाँ, और क्या हाल–चाल हैं तेरे ! क्या भाभी लाने का विचार नहीं है ? गृहिणी के बिना भी कोई घर कहलाता है ? माता–पिता कब तक साथ दे पायेंगे ? भाभी के आने से उन्हें भी तो कुछ सहारा हो ही जायेगा न ?''

उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना विज्ञान ने आगे कहा –''और सुन ! सुदर्शन के क्या हाल–चाल है। वह भी तो बहुत दिनों से नहीं मिला।''

ज्ञान ने कहा –'मेरे और सुदर्शन के काम में मौलिक अन्तर यह है कि मैं तो शिक्षण के क्षेत्र में हूँ, सो इस क्षेत्र में एक तो वैसे भी काफी छुट्टियाँ होती हैं, फिर कॉलेज के प्रोफेसरों पर प्राथमिक एवं माध्यमिक शालाओं के अध्यापकों की भाँति खाली समय में भी विद्यालय में ही उपस्थित रहने का कोई खास प्रतिबंध नहीं होता, पढने वाले विद्यार्थी भी कम ही होते हैं। इसकारण वैसे तो इस क्षेत्र में समय ही समय है, पर काम जिम्मेदारी का है और गम्भीर अध्ययन–अध्यापन का है, सो जो व्यक्ति जिम्मेदारी अनुभव करे और काम करना चाहे, उसे तो काम ही काम है और जो न करना चाहे उसे कुछ भी काम नहीं है।

सौभाग्य से मेरी तो दर्शन और अध्यात्म में स्वभावत: रुचि है और संयोग से काम भी दर्शनशास्त्र पढाने का ही मिल गया है। इसलिए मेरे लिए तो कॉलेज भी घर जैसा है और घर भी कॉलेज जैसा ही है। एक ही धुन, एक ही काम, एक ही चर्चा–वार्ता। अत: मैं तो पूरा दिन फ्री होकर भी व्यस्त हूँ और व्यस्त होकर भी फ्री हूँ।

पर सुदर्शन एक वकील है; अत: वह कहता है कि मुझे तो मरने की भी फुरसत नहीं है। एक दिन मैंने तो उससे कह दिया कि ''भाई ! यह तो बहुत ही बढिया बात है। तू सदा व्यस्त ही रहना, यदि मरने को फुरसत मिल गई तो तेरा सब करा–कराया यों ही रखा रह जायेगा।

वह संकेत में ही समझ गया। समझदार को इशारा ही काफी होता है न ? तभी से वह दोनों समय स्वाध्याय को और दर्शन–पूजन को तो समय निकालने लगा है, बाकी जो व्यस्तता है वह तो है ही।''

विज्ञान ने आश्चर्य प्रकट किया –''क्या वह भी तुम जैसा ही पुरातन पंथी बन गया है ? क्या कहा ? दर्शन ! पूजन ! ! स्वाध्याय ! ! ! किस जमाने की बातें कर रहा है तू ? क्या पूजा–पाठ कोरा ढोंग नहीं है ? क्या पंडिताई कोरा पाखंड नहीं है ?

अरे मित्र ! यह धन्धा बेचारे पण्डितों को ही रहने दो न ! समाज को बेवकूफ बनाने के लिए वे क्या कम पड़ते हैं, जो तुम भी उनके सहयोगी बन गये हो। अरे ! तुम्हें तो उन पण्डितों का भंडाफोड़ करने का काम करना चाहिए था, ताकि समाज उनके चक्कर से बच सके। पढे–लिखे प्रोफेसर और वकील होकर भी किन दकियानूसी बातों में पड़ गये हो तुम लोग ?

अरे मानव सेवा करो, मानव सेवा ही सच्चा धर्म है। ''अरे मित्र ! तुम तो यों ही बहक गये, पहले उससे मिलो तो सही और उसके विचारों से भी परिचित होकर तो देखो, हो सकता है उसके विचार तुमसे मिलते–जुलते हों। जो पण्डित तुम्हें पाखंडी दिखते हैं, जो पुजारी तुम्हें ढोंगी दिखते हैं; हो सकता है, वे पण्डित वास्तव में पाखंडी हों और वे पुजारी भी ढोंगी हों; पर इसका अर्थ यह तो नहीं है कि ज्ञान ही पाखंड हो गया और पूजा–पाठ ही ढोंग हो गये। पूजा–पाठ तो ढोंग नहीं है, ज्ञान तो पाखंड नहीं है ? तो क्यों न हम धर्म का सच्चा ज्ञान अर्जित कर झूठे पाण्डित्य प्रदर्शन का पर्दाफाश कर दें ? क्यों न हम सच्चे पुजारी बनकर ढोंगियों के ढोंग को न चलने दें ? पर इसके लिए पहले स्वाध्याय द्वारा स्वयं को सच्चा ज्ञान अर्जित करना होगा न ?

सुदर्शन एक वकील है, कानून का पंडित है। वह जानता है कि जिस तरह कोर्ट में जाने के पहले तत्सम्बन्धी फाइलें और कानून की किताबें पढना जरूरी है, उसी तरह वीतराग धर्म की वकालत करना हो तो तत्सम्बन्धी साहित्य का आद्योपान्त अध्ययन करना भी जरूरी है।''

विज्ञान अपने जोश के साथ होश में आता हुआ बोला – ''हाँ, तू बिलकुल ठीक कहता है, चलो मैं भी उससे मिलना चाहता हूँ और जानना चाहता हूँ कि वह कितने गहरे पानी में हैं ?''

यह कहते हुए वे दोनों सुदर्शन के घर की ओर चल दिये।

ठंड का मौसम, उसमें भी माघ का महीना, अत: ठंड तो अपने यौवन पर थी ही, मावठ पड़ने और तेज हवायें चलने से ठंड का प्रभाव और भी अधिक बढ गया था।

पर ऐसा कुछ नहीं था कि कामकाज ही ठप्प हो गया हो। दिन-रात चलने वाले कारखाने यथावत चल रहे थे, सड़कों पर दौड़ने वाले छोटे-बड़े वाहन बराबर सड़कों पर दौड़ रहे थे, मजदूर अपनी मजदूरी पर जा चुके थे, बाजार खुले थे, धंधा-व्यापार भी बराबर चल रहा था।

स्कूल कॉलेज भी खुले थे और लगभग सब छोटे-बड़े बालक वृन्द अपनी-अपनी पुस्तकें बगल में दबाये शालाओं में पहुँच रहे थे।

पर आदर्श विद्यालय के अधिकांश क्लास रूम खाली पड़े थे। विद्यार्थी न आये हों, यह बात नहीं थी, पर कक्षा में अध्यापक के आये बिना वे बालक वहाँ बैठे-बैठे करते भी क्या। अत: कुछ पुस्तकालयमें चले गये थे, कुछ टी-स्टाल में जा बैठे थे और कुछ खेल के मैदान में इधर-उधर घूम रहे थे तथा कुछ क्लास रूम के आसपास खड़े-खड़े अध्यापकों के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

प्राचार्य महोदय अपने प्राचार्य कक्ष में बैठे-बैठे न्यूज पेपर पढने में व्यस्त थे। दो-चार अध्यापकों को छोड़कर शेष सभी अध्यापक शिक्षक कक्ष में हीटर जलाये चुनावी चर्चा का आनन्द ले रहे थे।

ज्यों ही प्रोफेसर ज्ञान ने दर्शन शास्त्र का प्रथम पीरियड पढाने के बाद शिक्षक कक्ष में प्रवेश किया तो उसे आया देख उसके ही साथ नियुक्त हुए एक नये साइंस के शिक्षक ने धीरे से लोगों की निगाहें बचाकर पंखा चला दिया।

वहीं बैठे हिन्दी साहित्य के वरिष्ठ शिक्षक ने विस्मय भाव से पूछा -''अरे ! इतनी सर्दी में यह पंखा किसने चलाया है ?''

तीसरे एक अधेड़ उम्र के कॉमर्स के शिक्षक ने व्यंग्य करते हुए कहा -''बेचारा प्रो. ज्ञान पढा-पढाकर पसीना-पसीना हो गया है न ? और पढाते-पढाते उसका माथा भी तो गरम हो गया होगा न? बस, इसी कारण उस पर कृपा करके किसी दीनदयाल ने ही चलाया होगा।''

चौथे अंग्रेजी के शिक्षक ने कहा - ''अच्छा, तो यह बात है! मैं समझा नहीं था कि यहाँ भी ऐसे दीनदयाल हैं।''

पाँचवें अध्यापक ने चौथे को निशाना बनाकर कटाक्ष किया - 'तुम समझोगे भी कैसे ? पुरानी पीढी के थर्ड क्लास अध्यापक जो ठहरे। तुममें अक्ल ही कितनी है।''

उनमें से एक पुराने अध्यापक को प्रो. ज्ञान के प्रति किया गया नये अध्यापकों का यह व्यवहार अच्छा नहीं लगा, अत: उसने कहा -''अरे भाई ! ये व्यर्थ की बातें बन्द भी करो न ! इस तरह एक भले आदमी का मजाक उड़ाना तुम्हें शोभा नहीं देता।

विषय बदलने की भावना से उसने प्रो. ज्ञान से प्रश्नवाचक मुद्रा में पूछा -''क्यों ज्ञान ! तुम्हारे उस ज्ञापन का क्या हुआ, जिसमें तुमने वर्तमान शिक्षा नीति और गिरते हुए शिक्षा स्तर के बारे में शासन का ध्यान आकर्षित करने की योजना बनाई थी ? **(क्रमश:)**

आगामी कार्यक्रम

(1) श्री सर्वोदय स्वाध्याय ट्रस्ट कोल्हापुर द्वारा हेरले नगर में निर्माणाधीन स्वाध्याय भवन एवं जिनमंदिर में त्रिकाल चौबीस तीर्थंकरों की 72 वेदियों का शिलान्यास एवं श्री भक्तामर मण्डल विधान मंगलवार, दिनांक 20 से 22 जनवरी 2015 तक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित सम्पन्न होने जा रहा है।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, ब्र.यशपालजी जैन जयपुर, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित नीलेशभाई शाह मुम्बई आदि विद्वानों का समागम प्राप्त होगा। कार्यक्रम के प्रतिष्ठाचार्य एवं निर्देशक ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली हैं। सभी साधर्मीजन पधारकर धर्मलाभ लेवें। आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था रहेगी।

संपर्क सूत्र - शान्तिनाथ खोत (अध्यक्ष) 08275909519

(2) आचार्य कुन्दकुन्द की तपोभूमि पोन्नूरमलै में अष्टाह्निका महापर्व पर **श्री पंचमेरु नंदीश्वर मंडल विधान एवं आध्यात्मिक शिविर** का आयोजन दिनांक 26 फरवरी से 5 मार्च 2015 तक किया जा रहा है। इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा कारणशुद्धपर्याय एवं पण्डित श्री चेतनभाई मेहता राजकोट द्वारा समयसार (गाथा 14-15) पर कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा। शिविर में पधारने के इच्छुक साधर्मीजन **9300642434 (विराग शास्त्री)** पर संपर्क कर रजिस्ट्रेशन नम्बर प्राप्त कर लें। पोन्नूर मार्ग सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने हेतु **04183-291136, 225033** पर संपर्क करें। चैन्नई से पोन्नूर तक के लिए सरकारी बस सेवा उपलब्ध है।

(3) देवलाली-नासिक (महा.) में दिनांक 6 से 10 फरवरी 2015 तक करणानुयोग शिविर आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर डॉ. उज्ज्वला शहा द्वारा प्रतिदिन 6-6 घंटे कक्षाओं का लाभ मिलेगा। आपके आने की पूर्व सूचना देवलाली/मुम्बई ऑफिस में अवश्य दें, ताकि आपकी समुचित व्यवस्था की जा सके। आवास व भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क रहेगी। सभी साधर्मीजन 'सम्यग्ज्ञानचंद्रिका जीवकाण्ड भाग 1 व 2' ग्रंथ अपने साथ लावें। ये शास्त्र देवलाली में सशुल्क उपलब्ध होंगे।

संपर्क सूत्र - वीतराग वाणी प्रकाशक, 157/9, निर्मला निवास, सायन (पूर्व), मुम्बई-400022, फोन - 022-24073581; पूज्य कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, कहान नगर, लाम रोड, देवलाली, जिला-नासिक, 422401 (महा.), फोन - 0253-2491044

धर्म क्या, क्यों, कैसे और किसके लिए – *(तीसरी किश्त, गतांक से आगे)*

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

अब तक हमने पढा कि किस प्रकार दाता भगवान और याचक भक्त के बीच एक और वर्ग अवतरित हो गया, विधि विधान सम्पन्न करवाने वाले पण्डित और पुजारी का; अब आगे पढिये –

हमारी कल्पना का भगवान भी हमारी ही तरह सीमित शक्ति, सीमित साधन और सीमित दृष्टिकोण वाला एक आधा–अधूरा, रागी–द्वेषी संकीर्ण विचारधारा वाला जनसामान्य सा व्यक्ति होता है जो अनेकों बंदिशों और सीमाओं में रहकर काम करता है।

हम पाते हैं कि भगवान कौन हैं, कैसे होते हैं, क्या हैं, हैं भी या नहीं; हमें इस बात की सही समझ नहीं है और न ही हमें इसकी परवाह ही है। हम सभी ने तो बस अपनी–अपनी समझ से अपने–अपने भगवान की एक काल्पनिक प्रतिमा अपने मन में बसा रखी है।

कैसे हैं वे हमारी कल्पना के भगवान ?

हमारी कल्पना के ***वे भगवान न तो सर्वज्ञ हैं*** जो कि स्वयं ही यह जान और समझ सकें कि हमें, उनके भक्तों को, उनके पुजारियों को कब और क्या चाहिए इसलिए हमें उन्हें अपनी फरमाइशों की लिस्ट थमानी पड़ती है।

हमारी कल्पना के ***वे भगवान सर्वव्यापी भी नहीं*** हैं कि जब और जहाँ चाहें हम उनसे सम्पर्क कर सकें, गुफ्तगू कर सकें। वे सिर्फ कहीं–कहीं ही पाये जाते हैं, अमूमन मंदिरों आदि उपासना स्थलों पर। उनसे संपर्क करने के लिए हमें उनके उपासना स्थलों पर जाना पड़ता है, उनके यहाँ अभी तक ऑनलाइन सर्विस की शुरुआत नहीं हुई है।

एक बात और, हम उनके उपासना स्थल पर जाते भी हैं पर ***उनके सभी उपासना स्थल भी समान रूप से अधिकार सम्पन्न नहीं हैं,*** हर उपासना स्थल पर तो मात्र सीमित सर्विस ही उपलब्ध है, एक ही वही भगवान भी अपनी सभी मूर्तियों के माध्यम से भी सभी काम नहीं करते हैं और अपनी किसी विशिष्ट मनोकामना की पूर्ति हेतु हमें उनके किसी विशिष्ट उपासना स्थल पर किसी विशिष्ट प्रतिमा के सामने ही अर्जी लगानी पड़ती है मानो उन्होंने उसी प्रतिमा को अपनी सोल सेलिंग एजेन्सी दे रखी हो। कभी–कभी तो वह भी मात्र किसी विशिष्ट दिन और समय पर ही, मानो कोई त्वरित उपाय शिविर **(Fast solution camp)** लगाया गया हो।

हमारी कल्पना के ***वे भगवान सर्वशक्तिमान भी नहीं हैं*** जो बिना शर्त सब कुछ कर सके, जो चाहें सो कर सकें। उनके साथ सौदा पट जाने और एग्रीमेन्ट हो जाने के बाद भी बिना मीनमेख के वह सब कुछ, सही समय पर वैसा का वैसा नहीं मिल जाता जिसकी अभिलाषा प्रकट की गई हो। जो कुछ भी मिलता है वह देर–सबेर, आधा–अधूरा और अनेकों शर्तों **(if & buts)** के साथ मिलता है। यदि एक सुकून मिलता है तो उसके साथ चार व्याधियाँ भी जुड़ी होती हैं। यदि संतति मिलती है तो वह प्रतिकूल होती है, धन आता है तो इन्कमटेक्स वालों को साथ लेकर आता है, जीवन मिलता है तो अनेकों व्याधियाँ साथ लेकर मिलता है, जब चने मिलें तब दाँत नहीं होते हैं और जब दाँत हों तो चने नहीं मिलते आदि।

हमारी कल्पना के भगवान भी हम जैसे ही रागी–द्वेषी और पक्षपात करने वाले हैं, वे पूजा करने वाले पर प्रसन्न हो जाते हैं और निन्दा करने वाले पर नाराज। मन्नत मांगे जाने पर वे प्रलोभन देने वाले का काम कर देते हैं, चाहे वह काम अनैतिक और अन्यायपूर्ण ही क्यों न हो पर अन्य लोगों की सुनवाई हो भी या न भी हो यह जरूरी नहीं।

एक बात और, हमारी कल्पना के इन भगवानों के दरबार में भाजी और खाजा सब एक भाव पर मिल जाते हैं, इनमें ***सही काम की सही कीमत के बारे में समझ का अभाव नजर आता है।***

हमारी कल्पना के ***इन भगवानों में व्यावसायिक नैतिकता का अभाव भी दृष्टिंगत होता है*** और ये दो परस्पर विरोधी व्यक्तियों की दो परस्पर विरोधी कामनाएं पूरी करने की पेशगी स्वीकार करने में भी हिचकते नहीं हैं, वे एक साथ किसान की बरसात होने की कामना और व्यापारी की बरसात न होने की कामना पूरी करने की जिम्मेदारी स्वीकार कर लेते हैं।

कभी–कभी तो हमें यह अपनी कल्पना के ***ये भगवान बड़े असहाय से नजर आते हैं*** जब वे न तो अपने आलोचकों को दण्डित कर पाते हैं और न ही अपने भक्तों को पुरस्कृत। गली–गली में उनके निन्दक फलते–फूलते दिखाई देते हैं और उनके भक्त कष्टों और अभावों भरा जीवन व्यतीत करते देखे जाते हैं।

हम देखते हैं कि हम ***भक्तों को भी अपने इन कल्पना के भगवानों पर वैसा भरोसा नहीं है*** जैसा साधारण से मानवों पर भी होता है, इसीलिए तो हम अपने काम करवाने के लिए मनुष्यों को तो रिश्वत पेशगी ही दे देते हैं, पर भगवान से कहते हैं कि फलां काम हो जाने पर यह भेंट दूंगा।

हमें उनकी क्षमताओं और शक्तियों का भी भरोसा नहीं है तभी तो हम अंत में उनके पास तभी जाते हैं जब कहीं और हमें हमारा काम होता नजर न आये, जब तक कहीं और से आशा बनी रहे हम भगवान को कष्ट नहीं देते हैं। सभी डॉक्टरों द्वारा जवाब दे दिए जाने के बाद ही हम उपासना स्थलों की ओर रुख करते हैं; ऐसे हालात में हम सिर्फ किसी एक ही भगवान के भरोसे भी नहीं बैठ जाते हैं, बल्कि सभी भगवानों के दरबार में अपनी अर्जी लगा देते हैं, क्योंकि हमें मालूम नहीं कि कौनसा भगवान हमारी सहायता कर पायेगा या कोई कुछ कर भी पायेगा या नहीं।

इस प्रकार हम पाते हैं कि हमारी कल्पना का भगवान उन सभी मानव सुलभ कमियों और दुर्गुणों से भरापूरा है, जिन दुर्गुणों के धारक व्यक्ति से हम साधारण सा सम्बन्ध रखना भी पसंद नहीं करते और ऐसे किसी व्यक्ति की संगति को हम अपने जीवन का सबसे बड़ा दुर्भाग्य मानते हैं। इसप्रकार हमारे और हमारी कल्पना के हमारे भगवान के बीच का रिश्ता अत्यंत अनिश्चित सा अत्यन्त अविश्वास का, अत्यन्त क्षणिक, स्वार्थ से भरपूर और निष्ठा विहीन ही होता है। **(क्रमशः)**

(आगामी कार्यक्रम...)

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित पंचतीर्थ एवं सीमंधर जिनालय के भगवंतों का

महामस्तकाभिषेक एवं तृतीय वार्षिक महोत्सव

दिनांक 20 फरवरी से 22 फरवरी 2015 तक

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा फरवरी 2012 में ऐतिहासिक एवं भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया था; उस महामहोत्सव की यादें सभी को पुन: ताजा हो जावें, इस हेतु यहाँ पंचतीर्थ जिनालय एवं सीमंधर जिनालय में विराजमान जिनबिम्बों का **महामस्तकाभिषेक एवं पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का तृतीय वार्षिक महोत्सव दिनांक 20 से 22 फरवरी 2015 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।**

इस त्रिदिवसीय महोत्सव में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र.यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा आदि अनेक विद्वानों का प्रवचन, प्रौढ कक्षा व गोष्ठियों के माध्यम से अपूर्व लाभ प्राप्त होगा।

इसके अतिरिक्त नित्य-नियम पूजन, जिनेन्द्र भक्ति, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का भी आयोजन किया जायेगा।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के साथ पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर और टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के छात्रगण सम्पन्न करावेंगे।

इस मंगल अवसर पर पधारने हेतु आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

भोजन एवं आवास की समुचित व्यवस्था हेतु अपने आगमन की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें।

विशिष्ट आकर्षण :- (1) गुरुदेवश्री के भवतापहारी सी.डी. प्रवचन, (2) पंचकल्याणक विधान का आयोजन, (3) अष्टदेवियों द्वारा मातादेवी की तत्त्वचर्चा, (4) अतिआकर्षक जन्मकल्याणक की इन्द्रसभा, (5) तपकल्याणक की राजसभा का आयोजन, (6) जिनेन्द्र भक्ति संध्या

दृष्टि का विषय

8 तृतीय प्रवचन –डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

विश्वविद्यालयों में जो न्याय–शास्त्र पढ़ाया जाता है, उसको प्रमाण और प्रमेय – इन दो भागों में बाँटकर पढ़ाया जाता है।

न्यायदीपिका और परीक्षामुख – ये दोनों न्याय के ग्रन्थ हैं। इन्हें न्याय के ग्रन्थ इसलिए कहते हैं; क्योंकि इनमें न्याय अर्थात् नय और प्रमाण के स्वरूप पर विचार किया जाता है।

यद्यपि द्रव्यसंग्रह में भी नय और प्रमाण का वर्णन है; लेकिन उनमें वस्तु का स्वरूप नय और प्रमाण से स्पष्ट किया है; इसलिए **द्रव्यसंग्रह वस्तुव्यवस्था का ग्रन्थ है, न्याय का ग्रन्थ नहीं है। नय लगाने से कोई ग्रन्थ न्याय का ग्रन्थ नहीं हो जाता।**

जिन ग्रन्थों में प्रमाण और नय का स्वरूप समझाया जाय, उन ग्रन्थों का नाम है – न्याय के ग्रन्थ। जैसे – प्रमेयकमलमार्तण्ड, प्रमेयरत्नमाला आदि। आप्त परीक्षा व आप्तमीमांसा न्याय के ग्रन्थ नहीं हैं; क्योंकि इसमें आप्त के स्वरूप पर विचार किया है।

यद्यपि विचार करते समय अनेक ग्रंथों में नय और प्रमाण का वर्णन आया है; लेकिन ये न्याय के ग्रन्थ नहीं हैं। जैसे – मोक्षमार्गप्रकाशक में मोक्ष का मार्ग बताया है तथा विषय–वर्णन के मध्य में नय भी बता दिए हैं तो वह भी न्याय का ग्रन्थ नहीं हो गया। अतएव आप्तपरीक्षा, आप्त मीमांसा एवं मोक्षमार्गप्रकाशक न्याय के ग्रन्थ नहीं हैं। 'नयचक्र' नामक ग्रन्थ ही नय का ग्रन्थ है; क्योंकि उसमें नयों के स्वरूप का वर्णन है।

माइल्लधवल आचार्य ने जो नयचक्र लिखा है, उसमें १२ अध्याय हैं और मात्र एक अध्याय में नयों का वर्णन है, शेष ११ अध्याय में वस्तु के स्वरूप का वर्णन है। उसमें द्रव्य–अधिकार, गुण–अधिकार और पर्याय–अधिकार हैं। ये द्रव्य–गुण–पर्याय तो वस्तु का स्वरूप हैं; अतएव वास्तव में तो वह नयचक्र है ही नहीं। ४००–५०० गाथाओं में से मात्र १०० गाथाएँ नयों पर हैं, शेष गाथाएँ तो नयों पर है ही नहीं। उसका वास्तविक नाम तो **द्रव्य–स्वभाव प्रकाशक** है अर्थात् द्रव्य के स्वभाव का प्रकाश करनेवाला; किन्तु वह द्रव्यस्वभाव का प्रकाश नयों से होता है; इसलिए उसमें बाद में **नयचक्र** भी जोड़ दिया।

इसप्रकार **जिनमें प्रमाण और नयों का विस्तार से विवेचन हो, उन्हें न्याय के ग्रन्थ कहते हैं।** जैनाजैन दर्शनों में प्रमाणमीमांसा के ग्रन्थ होते हैं। उनमें सब दर्शनों पर बहस होती है।

कोई धर्म एक प्रमाण मानता है, कोई दो और कोई तीन। इनमें –

१. चार्वाक मत एक प्रत्यक्ष प्रमाण मानता है।
२. बौद्ध प्रत्यक्ष और अनुमान – ये दो प्रमाण मानते हैं।
३. नैयायिक तीन प्रमाण मानते हैं।
४. वैशेषिक चार प्रमाण मानते हैं।
५. प्रभाकर पाँच प्रमाण मानते हैं।
६. भाट्ट छह प्रमाण मानते हैं।

'अष्टसहस्री' जैसे ग्रन्थों में बहुत गहराई से इस विषय पर मीमांसा की गई है कि अकेला प्रत्यक्ष प्रमाण मानने पर क्या दोष है ? और अन्य प्रमाणों के नहीं मानने पर क्या दोष है? उसमें कहा है –

यदि मात्र प्रत्यक्ष प्रमाण मानते हैं अर्थात् हमें जो आँख से दिखता है, वही प्रमाण है, शेष प्रमाण नहीं है तो फिर हम हमारी आँखों के सामने उपस्थित पदार्थ को ही प्रामाणिक मान पाएँगे, शेष पदार्थों को नहीं ? फिर तो हम यह भी नहीं कह सकते कि हमारे बाप–दादाओं के दादा वगैरह रहे होंगे; क्योंकि हमने उन्हें अनुमान से ही जाना है, प्रत्यक्ष तो उन्हें कभी देखा नहीं।

हमारी सात पीढ़ी के पूर्वजों को हम **अन्यथा–अनुपपत्ति नाम के अनुमान से जानते हैं।** अन्यथा–अनुपपत्ति यह है कि यह नहीं होता तो वह भी नहीं होता।

जिसप्रकार यदि मेरे पिताजी नहीं होते तो मैं भी नहीं होता।

यदि पिताजी के पिताजी नहीं होते तो मेरे पिताजी भी नहीं होते। इसप्रकार इस **अन्यथानुपपक्षित्त नाम के अनुमान से ही हम अपने पूर्वजों को मानते हैं।**

भगवान महावीर स्वामी के काल में २६०० वर्ष पहले भी हमारे पूर्वज रहे होंगे; क्योंकि यदि उस समय हमारे पूर्वज नहीं रहे होते तो आज हम भी नहीं होते। **यह अन्यथानुपपत्ति नाम का अनुमान है।**

बौद्ध, प्रत्यक्ष और अनुमान – इसप्रकार दो ही प्रमाण मानते हैं।

नैयायिक अर्थापत्ति को प्रमाण मानते हैं। अर्थापत्ति का तात्पर्य है कि यदि यह नहीं होगा तो काम नहीं होगा अर्थात् अर्थ में आपत्ति आ जाएगी। जैसे – **उपरि वृष्टिरासीत्, अधोपूररन्यथानुपपत्ते:** अर्थात् ऊपर बरसात हुई है, अन्यथा नीचे बाढ़ नहीं आ सकती थी। गाँव में तो सूखा पड़ रहा है और नदी में बाढ़ आ रही है।

ऐसा हो सकता है कि गाँव में लोग पानी के लिए तरसते हों, कुओं में पानी नहीं हो, भयंकर गर्मी हो रही हो और उसी गाँव के बगल से जो नदी निकल रही हो, उसमें बाढ़ आ जाय अर्थात् एक ही गाँव में भयंकर सूखा और बाढ़ की मार, दोनों एक साथ हो

सकते हैं।

जैसे – कानपुर में बिल्कुल सूखा पड़ रहा हो अर्थात् वहाँ एक बूँद भी पानी नहीं बरसा हो और गंगा नदी हिमालय से निकलकर हरिद्वार पहुँची व हरिद्वार में भयंकर बरसात हुई, वह गंगा हरिद्वार से जाकर कानपुर पहुँची तो कानपुर में बाढ़ आ जाएगी, जबकि कानपुर में एक बूँद भी पानी नहीं है।

''ऊपर बरसात हुई है, अन्यथा नीचे 'पूर' नहीं आ सकता है'' अर्थात् **यह हुआ है, अन्यथा वह नहीं हो सकता है – इसी का नाम है अर्थापत्ति।**

इसप्रकार अष्टसहस्री में अनेक पृष्ठों में जो मीमांसा हुई है, वह प्रमाणमीमांसा है, नयमीमांसा नहीं है; क्योंकि **अन्य धर्मवाले नय मानते ही नहीं हैं, मात्र जैनदर्शन ही एक ऐसा दर्शन है, जो नयों को मानता है।**

इसप्रकार भारतीय दर्शनों में छह प्रमाण माने जाते हैं, उनके नाम हैं – प्रत्यक्ष, अनुमान, अर्थापत्ति, उपमान, आगम और अभाव।

ये छह प्रमाण तो अन्य दर्शनों के हैं; जैनियों के छह प्रमाण इसप्रकार हैं – प्रत्यक्ष, स्मृति, प्रत्यभिज्ञान, तर्क, अनुमान और आगम।

इनमें अर्थापत्ति को अनुमान में और उपमान को सादृश्य प्रत्यभिज्ञान में, अभाव को प्रत्यक्ष प्रमाण में शामिल कर लिया है।

नय को आगम प्रमाण में शामिल किया है; क्योंकि नय श्रुतज्ञान में आते हैं और आगम भी श्रुतज्ञान का भेद। इसप्रकार आगम प्रमाण में नय सम्मिलित हैं। **(क्रमशः)**

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

ध्रुवधाम–बांसवाड़ा (राज.) : यहाँ दिनांक 21 से 28 दिसम्बर तक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के वीडियो प्रवचन के उपरान्त प्रारम्भिक 5 दिन दोनों समय ब्र. श्रेणिकजी द्वारा समयसार एवं मोक्षमार्गप्रकाशक पर तथा अन्त के 3 दिन पण्डित सुनीलजी शास्त्री राजकोट द्वारा नियमसार पर प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त पण्डित प्रकाशजी छाबड़ा इन्दौर द्वारा प्रातः विधान की जयमाला का अर्थ एवं सायंकाल प्रवचनसार पर प्रवचन हुए। स्थानीय विद्वानों में पण्डित राजकुमारजी शास्त्री, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री, पण्डित जगदीशजी पंवार, पण्डित रीतेशजी शास्त्री आदि विद्वानों का भी समागम प्राप्त हुआ।

विधान के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता स्व. भलावत श्रीमती धापूबाई धर्मपत्नी स्व.श्री मणीलाल जी की स्मृति में श्री वीरेन्द्र कुमार मथुरालालजी परिवार (पालोदा) इन्दौर थे।

विधि–विधान के समस्त कार्य पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल द्वारा संपन्न कराये गये।

कार्यकारिणी घोषित

(1) ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन ग्रेटर ग्वालियर का चुनाव मुमुक्षु मण्डल ग्वालियर के अध्यक्ष महेन्द्र जैन, महामंत्री सुशील जैन तथा अजित जैन (एम.श्री गारमेन्ट) एवं संस्था निर्देशक पण्डित शुद्धात्मप्रकाश शास्त्री के निर्देशन में संपन्न हुआ।

इस अवसर पर अध्यक्ष विमल जैन विजयवर्गीय, उपाध्यक्ष विनय जैन व सुनील जैन, महामंत्री शुद्धात्मप्रकाश शास्त्री, कोषाध्यक्ष स्वस्तिक जैन, पाठशालामंत्री रवि जैन 'वीर' व संभव जैन सराफा, सांस्कृतिक मंत्री संभव जैन व गौरव जैन, मीडिया प्रभारी सचिन जैन, प्रचार मंत्री शुद्धात्म जमौरिया व विपिन जैन, कार्यकारिणी सदस्य राजकुमार जैन, पवन जैन सर्राफ, अंकित जैन, यश जैन, शुभम जैन, सचिन जैन निर्वाचित हुये।

– शुद्धात्मप्रकाश शास्त्री, ग्वालियर

(2) मौ–भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन मौ का चुनाव सिघई राजाराम जैन, राकेश भडेरा, अशोक समेरा, राजेश गयेलिया के निर्देशन में संपन्न हुआ।

इस अवसर पर अध्यक्ष अमित चौधरी, उपाध्यक्ष राकेश जैन (ग्यारा वाले), महामंत्री राजीव जैन, मंत्री आगम जैन, कोषाध्यक्ष आसू जैन गयेलिया, संगठन मंत्री आसू चौधरी, सह–संगठन मंत्री जितेन्द्र जैन परघेना वाले, प्रचार मंत्री नवीन जैन, विद्युत मंत्री सोनू टकसारी व अंकित जैन, कार्यकारिणी सदस्य अमरीश जैन, पवन जैन, प्रदीप जैन, राकेश जैन, अनंत बरोली चुने गये।

चुनाव के उपरान्त नवीन संगठन द्वारा शपथग्रहण के रूप में सामूहिक सिद्धक्षेत्र सोनागिरजी की यात्रा की गई तथा एक दिवसीय भक्तामर मंडल विधान का आयोजन किया गया। **– नवीन जैन**

अखिल बंसल पुरस्कृत

दिल्ली : यहाँ यमुना विहार में ए.वी.एस. फाउण्डेशन ऋषभदेव द्वारा जैन समाज के प्रखर पत्रकार श्री अखिलजी बंसल को दिनांक 19 दिसम्बर को वाग्मिता पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

पुरस्कार के अन्तर्गत आपको सम्मान राशि के साथ प्रशस्ति–पत्र, शॉल व प्रतीक चिह्न भेंट किया गया।

ज्ञातव्य है कि आपको 2009 में पं. कैलाशचंद शास्त्री विद्वत्परिषद् पुरस्कार, 2011 में पारसदास अनिल कुमार जैन अहिंसा इन्टरनेशनल पत्रकारिता पुरस्कार एवं 2014 में ऋषभदेव पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। **– अंशुल जैन**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

2 जनवरी 2015, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के संबंध में उनके समकालीन मनीषियों द्वारा व्यक्त किये गये हृदयोद्गार –

जैन समाज मूर्धन्य विद्वान **पण्डित कैलाशचन्दजी सिद्धान्ताचार्य** वाराणसी लिखते हैं –

''आज से पचास वर्ष पूर्व तक शास्त्रसभा में शास्त्र बांचने के पूर्व में भगवान कुन्दकुन्द का नाम मात्र तो लिया जाता था, किन्तु आचार्य कुन्दकुन्द के समयसार आदि अध्यात्म की चर्चा करने वाले अत्यन्त विरल थे। व्यवहार को ही यथार्थ धर्म और पुण्य को ही मोक्षमार्ग कहा जाता था। ....

आज भी दिग.जैन विद्वानों में भी समयसार का अध्ययन करने वाले विरल हैं। हमने स्वयं समयसार तब पढा जब श्री कानजीस्वामी के कारण ही समयसार की चर्चा का विस्तार हुआ। अन्यथा हम भी समयसारी कहकर ब्र.शीतलप्रसादजी की हँसी किया करते थे। यदि श्री कानजीस्वामी का उदय न होता तो दिग. जैन समाज में भी कुन्दकुन्द के साहित्य का प्रचार न होता। आज जो सोनगढ साहित्य के नाम पर उसका बहिष्कार कर रहे हैं, उसे नष्ट-भ्रष्ट करने का प्रचार कर रहे हैं; वे प्राय: सब ऐसे ही हैं, जिन्होंने कुन्दकुन्द साहित्य का अध्ययन नहीं किया और मात्र ऊपरी बातों में उलझकर उसी को मूलधर्म मान बैठे हैं। हमारा पूर्ण विश्वास है कि विरोधी पक्ष ने इन पचास वर्षों में विरोध तो किया, किन्तु समयसार का अभ्यास नहीं किया। करते तो उनके विरोध में सोनगढ साहित्य का बहिष्कार करने जैसी बात न होती। सोनगढ का साहित्य प्रकारान्तर से कुन्दकुन्द का ही साहित्य है। समयसार आदि ग्रन्थों के इतने सुन्दर और सस्ते संस्करण दिग. जैन समाज कभी प्रकाशित कर ही नहीं सकता था।

सोनगढ के विरुद्ध अखबारी आन्दोलन तो वर्षों से चलता रहा है, किन्तु सोनगढ ने एक नीति अपनाई और वह विरोध में न पड़कर रचनात्मक प्रवृत्ति में लगा। इधर के तीन दशकों में उसने वह काम किया है, जिसे देखकर आश्चर्य होता है।

उन्होंने अपनी शैली के विद्वान प्रवक्ता तैयार किये। कुन्दकुन्दाचार्य के ग्रन्थों का सुन्दर और सस्ता प्रकाशन किया। वीतराग-विज्ञान पाठशालाएँ खोलीं, परीक्षालय चलाया। शिक्षण-शिविर की प्रणाली चलाई। देश में आपात स्थिति कायम होने के बाद इन्दिराजी ने जिस तत्परता से काम किया, सोनगढ वालों ने उससे कम तत्परता नहीं दिखलाई; किन्तु विरोधियों ने केवल अखबारी विरोध किया। सोनगढ के विरोध में झूँठी-सच्ची खबरें प्रचारित कीं। न एक पाठशाला खोली, न एक शास्त्र-सभा चालू की।''

हार्दिक धन्यवाद

आगरा निवासी **सौ.कां. एनी (प्रज्ञा) जैन** सुपुत्री श्रीमती मीना-राकेश एच.जैन का शुभ विवाह बण्डा निवासी **चि. गौरव जैन** सुपुत्र श्रीमती विनोदकुमार-सनतकुमार जैन के साथ दिनांक 1 दिसम्बर को संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक हेतु 2000/- रुपये प्राप्त हुये। हार्दिक धन्यवाद।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

1 से 7 जनवरी 2015	नागपुर (महा.)	पंचकल्याणक
20 से 22 जनवरी	हेरले-कोल्हापुर	वेदी शिलान्यास
23 से 25 जनवरी	दीवानगंज,भोपाल	वेदी शिलान्यास
15 फरवरी	हस्तिनापुर	शिलान्यास
20 से 22 फरवरी	जयपुर (राज.)	वार्षिकोत्सव
1 से 6 अप्रैल	विदिशा (म.प्र.)	पंचकल्याणक
17 से 23 मई	पारले (मुम्बई)	पंचकल्याणक
24 मई से 10 जून	मेरठ	प्रशिक्षण-शिविर

प्रकाशन तिथि : 28 दिसम्बर 2014

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए रेनबो ऑफसेट प्रिण्टर्स, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127